अदम्य

नई चेतना, नए स्वर – मासिक अंक | मार्च 2026

‘द ट्रैंड’ में पढ़ें

पंच-कुन: सहानुभूति या सिर्फ कॉन्टेंट भुनाने की होड़?

अदम्य

अदम्य पत्रिका के आगामी अंक के लिए रचनाएँ आमंत्रित हैं।

रचनाएँ भेजने के लिए दिशा-निर्देश:-

1. रचनाएँ मौलिक एवं अप्रकाशित होनी चाहिए।
2. रचनाएँ देवनागरी लिपि (यूनिकोड) में टाइप करके वर्ड डॉक्यूमेंट में ही भेजें।
3. रचनाकार अपनी न्यूनतम 1 और अधिकतम 5 रचनाएँ ही भेजें। 5 से अधिक रचना भेजने पर रचनाएँ अमान्य हो जाएंगी।
4. रचनाएँ केवल गूगल फॉर्म द्वारा ही भेजें।
5. रचनाएँ भेजने की अंतिम तिथि 10 मार्च 2026 है।

रचनाएँ केवल गूगल फॉर्म द्वारा ही भेजें

स्कैन करें

सर्वाधिकार सुरक्षित
अदम्य पत्रिका @2025-26

संपादक - विशेक
सह-संपादक - आरती
प्रूफरीडर - शिखा शिप्रा
सोशल मीडिया - अखिलेश कुमार

•

विज्ञापन शुल्क

Full Pagen Rs. 400
Half Pagen Rs. 200
Qtr. Pagen Rs. 100
Back Cover n'Rs. 700- (four colour)
Inside Front n'Rs. 500- (four colour)
Inside Back n'Rs. 400- (four colour)

•

- पत्रिका पूर्णतः अवैतनिक और अव्यावसायिक है।
- अदम्य पत्रिका में प्रकाशित लेखों में आए विचार लेखकों के निजी हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।
- अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है।
- अदम्य पत्रिका से जुड़े सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन हैं।

•

संपर्क करें

ईमेल आईडी
adamyapatrika@gmail.com

वेबसाइट
adamyapatrika.in

अनुक्रम

संपादकीय

त्रैमासिक से मासिक: एक निर्णय — विशेक (4)

लेख

महात्मा गांधी के प्रयोगों में लियो टॉलस्टॉय की भूमिका — अश्विन कुमार (6)

कविता

यह जो मेरे-तुम्हारे बीच फासला है — अशोक सिंह (11)

कहानी

घर — आकाश छेत्री (12)

लघुकथा

होली के रंग निराले — सीताराम गुप्ता (15)

द ट्रैंड

पंच-कुन: सहानुभूति या सिर्फ कॉन्टेंट भुनाने की होड़? — मानसी यादव (18)

पुस्तक समीक्षा

मनुष्यता एवं अधिकारों की गहरी जड़ें तलाशती कविताएँ — अखिलेश कुमार मौर्य (21)

संपादकीय

त्रैमासिक से मासिक: एक निर्णय

विशोक
संपादक, अदम्य पत्रिका

> “अदम्य का ध्येय प्रारंभ से स्पष्ट रहा है; नवचेतना को स्थान देना। यह नवचेतना केवल आयु से नहीं, दृष्टि से परिभाषित होती है। युवा होना केवल वर्षों का प्रश्न नहीं, विचार की ताजगी का प्रश्न है।”

अदम्य पत्रिका

अदम्य की शुरुआत एक प्रयोग के रूप में हुई थी। दो वर्ष पूर्व जब दिल्ली विश्वविद्यालय के नार्थ कैंपस में इसका लोकार्पण हुआ, तब यह स्पष्ट कहा गया था कि यह पत्रिका सुविधा का मंच नहीं होगी, बल्कि स्वतंत्र चिंतन और सृजन के प्रयोग का स्थान होगी। उस समय यह विचार मात्र एक घोषणा नहीं था; वह एक जोखिम भी था। बिना स्थापित संरचना, बिना दीर्घ अनुभव और बिना किसी संस्थागत सहारे के एक साहित्यिक पत्रिका आरम्भ करना अपने आप में साहस की मांग करता है। किंतु जहाँ प्रयोग की स्वतंत्रता होती है, वहाँ नए स्वर जन्म लेते हैं और परंपरा के भीतर भी नए मार्ग निर्मित होते हैं।

इन दो वर्षों की यात्रा में अदम्य ने स्वयं को निरंतर परखा है। प्रत्येक अंक केवल रचनाओं का संग्रह नहीं रहा, बल्कि वह हमारी संपादकीय समझ, चयन-दृष्टि और साहित्यिक प्रतिबद्धता की परीक्षा भी रहा है। प्रारंभिक अंकों में हमने अपनी सीमाओं को पहचाना; बाद के अंकों में उन्हें विस्तृत करने का प्रयास किया। कुछ अंकों में संपादकीय संरचना बदली, नई विधाओं को जोड़ा गया, उन लेखन शैलियों को भी स्थान दिया गया जिन्हें पहले हम स्वीकार नहीं करते थे। यह परिवर्तन अस्थिरता का संकेत नहीं था, बल्कि विकास का प्रमाण था। किसी भी जीवित साहित्यिक मंच के लिए परिवर्तन